भूमिका

साहित्य जीवन के विविध पक्षों का मूल्यांकन करता है। यह जीवन की अनुभूतियों एवं संघर्षों को व्यक्त करता ही है साथ ही साथ मानव समाज की हकीकत को बयां करता है। एक साहित्यकार अपने जीवन में जो कुछ भी देखता है तथा अनुभव करता है उसे अपने साहित्य में व्यक्त करने का प्रयास करता है। हिंदी साहित्य में साहित्यकार ने अपनी बातों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं को व्यक्त किया है। प्राचीनकाल से लेकर अब तक स्त्री के जीवन में जो समस्याएं आई तथा विषम परिस्थितियो में जो उतार चढ़ाव आए हैं उसका विवरण साहित्य में मिलता है। धर्मग्रंथ तथा इतिहास इस बात का प्रमाण है कि धर्म, संप्रदाय, जातियों तथा परंपराओं में बधा यह समाज स्त्री के चरित्र पहनावे और अस्तित्व के ऊपर सवाल खड़ा करता रहा है। समाज स्त्री को दासी, कुलटा समझा है। स्त्री प्रारंभ से ही साहित्य में वर्णित रही है।

वैदिक काल में स्त्री का जन्म शुभ माना गया किंतु उत्तर वैदिक काल में कन्या का जन्म अशुभ माना जाने लगा। सदैव से स्त्री को पुरुष की संपत्ति समझा गया तथा पुराणों में नारी का जीवन एक परिधि में सीमित हो गया। आदिकाल में स्त्री मात्र भोग्या बनकर रह गई। मध्यकाल आते-आते स्त्री का जीवन विसंगतियों में ही डूबा रहा। सूफियों ने स्त्री को ब्रह्म मानकर जगत को प्रेममय दिखाया। सूर, तुलसी, कबीर ने अलग- अलग स्तर पर नारी जीवन का महत्त्व बताया। पुनर्जागरण काल में स्त्री को कुरीतियों से मुक्त करने का प्रयास किया गया।

समाज सुधारकों ने स्त्री को रूढ़ियों एव आडम्बरों से मुक्त करने के लिए स्त्री संगठनों की स्थापना की। 1882 ई.में एक क्रांतिकारी महिला ताराबाई शिंदे की पुस्तक 'स्त्री पुरुष तुलना' ने हलचल मचा दी तथा 1882 ई. में ही 'सीमंतनी उपदेश' पुस्तक छपी जिसमें स्त्री की गुलामी एवं यातना को दिखाया गया।

अठारहवीं-उन्नीसवीं सदी में ही महिलाओं ने पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर सवाल उठाने शुरू कर दिए थे जिसका जवाब उन्हें कभी नहीं दिया गया। 14वीं-15वीं सदी में मीरा ने, उसके बाद महादेवी तथा सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्त्री अधिकारों की अधिकारों की मांग की। वैदिक परंपरा से ही स्त्रियों को उनके अधिकारों से वंचित रखा गया। पितृ प्रधान समाज ने सदैव से स्त्रियों का शोषण किया। आज भी शहरी महिलाओं को बहुत से अधिकारों की जानकारी है लेकिन ग्रामीण स्त्रियां अब भी अपने जीवन के कई अधिकारों से अनजान है। कामकाजी एवं अशिक्षित ग्रामीण स्त्रियां अब भी नहीं जानती कि कानून एवं समाज ने ऐसे भी अधिकार उनको दे रखे हैं कि वे आत्मनिर्भर हो सकती हैं। सरकारी सूची तथा रजिस्टर में यह लिख भी दिया गया है कि स्त्रियां शिक्षित हो गई हैं पर ग्रामों एवं कस्बों में सर्वे के आधार पर कैसे कह दिया जाए कि स्त्री साक्षरता बढ़ी है? यह सर्व विदित है कि स्त्री प्रारंभ से ही भेद-भाव एवं शोषण का शिकार रही है। स्त्री विमर्श के आधार पर स्त्री अपने शोषण, दमन, उत्पीड़न से छुटकारा पा सकती है। वह अपने अधिकारों का प्रयोग कर अपने अस्तित्व को बचा सकती है। जिस

स्त्री विमर्श की पुकार आज तेजी से बढ़ी है उस पुकार को पंत ने उन्नीसवीं सदी में साकार किया था-

मुक्त करो नारी को,

युग युग की निर्मम काया से,

****

उसे पूर्ण स्वाधीन करो,

वह रहे न नर पर अवसित।।,,,,,,,,(पंत)

वर्तमान दौर में कई लेखक/लेखिका स्त्री विमर्श पर गम्भीर विचार कर रहे हैं लेकिन यह साहित्य तथा संगठन तक ही सीमित रहा है। हजारों सालों से हो रहे शोषण की परंपरा को खत्म करने में स्त्रियां आगे-आ रही हैं। अपने दमन से मुक्ति पाने के लिए स्त्रियां निरंतर संघर्ष भी कर रही हैं। ऐसे विचारों की क्रांति को स्त्री विमर्श आगे लेकर चल रहा है। स्त्री आन्दोलनों एवं संगठनों के प्रयास से नारीवाद की अवधारणा अब तेजी से विकसित हो रही है जिसमें स्त्रियों के अस्तित्व की पहचान छुपी है। आज विश्व में स्त्री विमर्श की चर्चा हो रही हैं। स्त्री के विषय में कई वर्षों से पितृसत्तात्मक व्यवस्था की सोच मानव समाज के अंदर बैठ गई है। उस सोच में परिवर्तन करने के लिए ही स्त्री विमर्श शुरू हुआ है। इसमें भले ही अब तक सफलता न मिली हो फिर भी स्त्रियों के अंदर उत्साह देखने को मिल रहा है। स्त्री और पुरुष दोंनो इस दृष्टि से बराबर हैं पर पितृव्यवस्था पुरुष को श्रेष्ठ घोषित कर स्त्री को मूल्यहीन समझता है। प्रथम बार स्त्री-विमर्श के प्रभाव से स्त्री के अधिकार एवं अस्तित्व की वकालत की गई।

नारी मुक्ति आंदोलन के द्वारा भी देश में वैचारिक परिवर्तन हुआ। नारीवाद एक ऐसा वैचारिक स्त्री आंदोलन है जिसमें स्त्री के चिंतन एवं अस्तित्व का ग्राफ तैयार किया है। स्त्री के संघर्ष एवं वेदना से स्त्री का गहरा संबंध है। स्त्री को गुलाम बनाएं रखने की मानसिकता जो पितृ व्यवस्था में व्याप्त थी स्त्री उसके खिलाफ है। स्त्री में सही-गलत निर्णय लेने की क्षमता तो है ही साथ ही साथ अपना संघर्षमय जीवन जीने का जज्बा भी है। मैंने अपने शोध प्रबंध में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि स्त्री विमर्श ने स्त्री के अंदर उसके अधिकारों की अलख जगाकर, पुरुष एवं स्त्री में भेद को खत्म कर दोनों को समान समझने की प्रेरणा प्रदान करे। इतना ही नहीं स्त्री के जिस अधिकार एवं स्वतंत्रता की बात गांधी, राजाराम मोहनराय, विवेकानंद, मीरा, महादेवी कर रहे थे ऐसे मुद्दों को लेकर स्त्री विमर्श गतिमान है। स्त्री-विमर्श स्त्री के अस्तित्व, समानता और स्वतंत्रता, आत्मसम्मान के अधिकार का दूसरा नाम है।

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के प्रति मेरी रुचि सदैव से रही है। जब मैंने एम.ए. किया उस दौरान मुझे मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'इदंन्नमम पढ़ने का अवसर मिला। इस उपन्यास के माध्यम से मुझे स्त्री विमर्श को समझने तथा इस पर कुछ नया कार्य करने की इच्छा हुई। स्त्री जीवन की कड़वाहटों एवं विसंगतियों को समझने के बाद मेरे मन में इस विषय पर कई सवाल उठे जैसे- स्त्री पुरुष दोंनो मनुष्य हैं तब पुरुष को ही श्रेष्ठ क्यों माना गया?

स्त्री के सभी अधिकारों में कटौती करके उसे गुलाम एवं अस्तित्वहीन क्यों मान लिया गया? यौन शुचिता के सवाल उठते हैं तो नारी अपवित्र हो गई पुरुष क्यों नहीं हुआ? पुरुष को श्रेष्ठ समझा गया वही स्त्री को वस्तु क्यों कहा गया? नारी को पराधीन तथा कुलटा समझा गया जबकि पुरुष इन सबसे मुक्त क्यों है? स्त्री को ही क्यों अहसास करवाया जाता है कि वह कमजोर है, वह कुछ नहीं कर सकती जबकि पुरुष को सर्वाधिकार कैसे मिले? स्त्री जीवन के ऐसे मुद्दों की पड़ताल करने के लिए मैंने इस विषय पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया। मेरी शोध निर्देशिका डॉक्टर अनीता शुक्ल, सहायक आचार्य हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा ने मुझे मेरी सहमति से स्त्री विमर्श और मृणाल पांडे के रचना संसार पर शोधकार्य करने का विषय सुझाया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध छः अध्यायों में विभक्त है-

प्रथम अध्याय में 'स्त्री विमर्श का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र तथा महत्त्व' का विवरण है। 'स्त्री' शब्द का अर्थ बताते हुए स्त्री की छवि एवं उसके लिए कई प्रकार के शब्द जो प्रयुक्त किए गए हैं उस का परिचय है। 'विमर्श' शब्द की व्याख्या भी एक चिंतन को जन्म देता है। विभिन्न विद्वानों की परिभाषा देकर स्त्री विमर्श की सार्थकता प्रकट करने की कोशिश की गई है। प्राचीन काल से आज तक स्त्री की भागीदारी, उसके अधिकार तथा उसके संघर्षों की कहानी को बड़ी बारीकी से बताने का प्रयास किया गया है। स्त्री

जीवन की कहानी स्त्री विमर्श में स्पष्ट मिलती है। स्त्रियों का पारिवारिक जीवन, सामाजिक क्षेत्र में स्त्रियों की भूमिका तथा राजनीतिक, आर्थिक, व्यापार, शिक्षा, कला संगीत, साहित्य, मीडिया तथा खेल आदि क्षेत्रों में स्त्रियां बहुत आगे निकल चुकी हैं। स्त्री-विमर्श का महत्त्व क्यों है? इस पर बात करते हुए रूढ़ियों, परंपराओं के खंडन तथा स्त्रियों के अधिकार में आई कमी, पितृसत्तात्मक व्यवस्था के बदलते पैमानों पर संक्षिप्त टिप्पणी की गई है। स्त्रियों के प्रति जो धारणा लोगों में आज पनप रही है तथा बदलते समय में स्त्रियों के प्रति जो नजरिया बदला है इस पूरे अध्याय में इन बिंदुओं पर चर्चा की गई है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत 'मृणाल पांडे के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' की चर्चा की गई है। मृणाल पांडे का जन्म कहां हुआ? तथा बाल्यकाल की कहानी का आधार लेकर उनके पारिवारिक जीवन को दर्शाया गया है। उनका पैतृक निवास, शिक्षा, माता-पिता का परिचय, दादी-नानी तथा परिवार जनों का विवरण मौजूद है। मृणाल पांडे का कार्य क्षेत्र बहुत विस्तृत है। मृणाल जी ने साहित्य के क्षेत्र में अपना योगदान दिया। उनके नाटक, उपन्यास कहानियां तथा निबंधात्मक लेख स्त्री जीवन की विसंगतियों को उजागर करते हैं। मृणाल पांडे पत्रकार भी हैं। पत्रकारिता जगत के अनुभवों के साथ-साथ उन्होंने अपना शोधपरक साहित्य स्त्रियों के लिए लिखा। रचनाओं के परिचय के साथ-साथ पुरस्कार तथा सम्मान भी इस अध्याय में मौजूद है। भारत

में स्त्री लेखन के क्षेत्र में मृणाल पांडे का योगदान नामक बिंदु का उल्लेख करते हुए पत्र पत्रिकाओं के संपादन का भी हवाला दिया गया है।

तृतीय अध्याय में 'मृणाल पांडे के उपन्यासों में स्त्री विमर्श' नामक शीर्षक का उल्लेख है। इनके प्रसिद्ध उपन्यासों में स्त्री के दीन-हीन दशा तथा दादी-नानी की कथा का सूचना परक विवरण मिलता है। 'पटरंगपुरपुराण' नामक उपन्यास पटरंगपुर के निवासियों तथा वहाँ की स्त्रियों की अकुलाहट को व्यक्त करता है। यह उपन्यास 15 पर्वों में विभक्त है। लेखिका ने त्रेता के मध्ययुग से अंग्रेजी शासन तक की सभी परिस्थितियों को बड़ी संजीदगी के साथ व्यक्त किया है। पहाड़ी लड़कियों की शादी कम उम्र में हो जाती थी, शिक्षा का अभाव तथा समाज में फैले आडम्बरों का पर्दाफाश लेखिका ने किया है । पहाड़ी सभ्यता एवं संस्कृति को व्यक्त करता यह उपन्यास औरतों के गृहस्थ जीवन तथा धर्म, भाषा, रीति-रिवाज, अंचल की संस्कृति को व्यक्त करता है। 'अपनी गवाही 'उपन्यास में मृणाल जी के जीवन तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान की चर्चा है । 'रास्तों पर भटकते हुए 'नामक उपन्यास में स्त्री जीवन के विडंबनापूर्ण जीवन का जिक्र है । 'देवी 'उपन्यास में देवी स्वरूप सामाजिक स्त्रियों का चित्रण है। 'हमको दियो परदेश' एवं 'विरुद्ध' उपन्यास में स्त्री जीवन का कारुणिक चित्रण है।

चतुर्थ अध्याय' मृणाल पांडे के कहानी संग्रह में स्त्री विमर्श' है। इनकी कहानियां स्त्री की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक विसंगतियों को प्रस्तुत करती

हैं। घर के चौखट के अंदर बंद स्त्री कब तक अपनी घुटन में डूबती-उतराती रहेगी? नारी जीवन की कुंठा एवं संत्रास को उकेरने वाली इनकी कहानियां स्त्री के व्यावहारिक पक्ष का मूल्यांकन करती हैं। धर्म एवं परंपराओं में विभक्त समाज स्त्री को आजादी एवं हक नहीं देना चाहता, केवल पहले की तरह गुलाम बनाकर रखना चाहता है। रूढ़ियों एवं आडम्बरों की बेड़ियों को तोड़कर स्त्री अब जागरूक हो चुकी है। इन सबका जिक्र मृणाल पाण्डे की कहानियों में है। इनके कुल तीन कहानी संग्रह हैं। 'बचुली चौकीदारिन की कढ़ी' में बचुली आमा से लेकर उस दर्जे में जीने वाली उन तमाम स्त्रियों का जिक्र है जो वर्षों से दबी-कुचली मानसिकता का शिकार हो रही थी। निर्धनता तथा अशिक्षा का शिकार यह स्त्रियां सही तौर पर जीवन जीना भूल गई थी। मृणाल पांडे ऐसी कहानियां लिखकर संपूर्ण स्त्री जाति को कुंठित मानसिकता की दृष्टि से ग्रसित, वंचित स्त्रियों को वैचारिक स्तर पर सजग करती हैं। 'चार दिन की जवानी तेरी' और 'यानी कि एक बात थी 'नामक कहानी संग्रह धराशायी होते मूल्यों को सुरक्षित करती हैं। इन संग्रहों में उपस्थित कहानियां नारी जाति की सामाजिक टकराहटों एवं कल्पनापूर्ण जीवन के अंतर्द्वंद्व को उजागर करती हैं। इनकी कहानियों में स्त्री आदर्शपरक एवं यथार्थवादी जीवनपरक मूल्यों की आकांक्षा रखती है। कुल मिलाकर इनकी कहानियां स्त्री को वैचारिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक स्तर पर मजबूती प्रदान करती हैं।

पंचम अध्याय 'मृणाल पांडे के नाटकों में स्त्री-विमर्श' है। इनके नाटकों का मंचन भी हो चुका है। इनके नाटक सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक स्तर पर लिखे गए हैं। 'मौजूदा हालात को देखते हुए' एवं 'राम रचि राखा' में पति-पत्नी के संबंधों, पारिवारिक सुगबुगाहट, द्वंद्वमय जीवन की वास्तविकता का विश्लेषण हैं। 'आदमी जो मछुआरा नही था' तथा 'चोर निकलकर भागा' नामक नाटक बेरोजगारी, अनाचार, पापाचार तथा समाज में फैले दुर्जन लोगों की हकीकत को बयां करता है। 'काजर की कोठरी' नामक नाटक में व्यक्ति के झूठे जीवन का चित्रण है, जहां वह अपने दिखावे के लिए धोखा, झूठ एवं गलत राजनीति का शिकार हो जाता है। इनके छोटे-छोटे रेडियो नाटक भी हैं। उन नाटकों में समाज में फैले व्यक्ति के काइयाँपन तथा अतिवादी प्रवृत्ति का विवरण है।

षष्ठ अध्याय 'मृणाल पांडे के निबंधों एवं अन्य विधाओं में स्त्री विमर्श' है। इनके लेख आगे चलकर पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हुए। 'परिधि पर स्त्री' एवं 'स्त्री देह की राजनीति से लेकर देश की राजनीति तक' नामक पुस्तक नारी जगत में क्रांतिकारी विचारों की वाहक है। ये पुस्तकें स्त्री विमर्श को एक नई दिशा देती हैं। इनके लेख स्त्रियों के संघर्ष एवं दुविधा पूर्ण जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके क्रांतिकारी विचारों को जन्म देते है। स्त्री अब संघर्ष की गाथा बनकर न रहे, वह अपने हक एवं मर्यादा की रक्षा के लिए स्वयं तत्पर हो। 'जहां औरतें गढ़ी जाती हैं' और 'ओ उब्बीरी' नामक पुस्तकें नारी की

सफलता एवम् सरलता का चित्रण करती हैं। 'स्त्री लंबा सफर' नामक पुस्तक में स्त्रियों के युग-युग के जीवन की कहानी है। 'ध्वनियों के आलोक में स्त्री' नामक पुस्तक स्त्रियों के संगीत के क्षेत्र में योगदान एवं प्राचीनकाल से लेकर अब तक संगीत के क्षेत्र में रुचि तथा योगदान का एक सफल विवरण है।

उपसंहार में निष्कर्षतः यह बताने का प्रयास किया गया है कि स्त्री आज भी सामाजिक कुरीतियों के तहत दोयम दर्जे का शिकार हो रही है। इसके अलावा सभी अध्यायों के सारतत्व को यहां समझाने का प्रयास किया गया है। इनके समग्र साहित्य तथा पत्रिकाओं के अध्ययन के उपरांत इनकी नारीवादी चेतना को वैचारिक स्तर पर उल्लेखित तथा समायोजित करने का श्रेष्ठतम प्रयास किया गया है। रिसर्च एवं सर्वेपरक इनका साहित्य स्त्रियों को जीवन जीने की एक नवीन शक्ति देता है जिससे कोई उनका शोषण न कर सके।

<u>आभार-</u>

अपने इस शोध प्रबंध को पूरा करने में मुझे जिन लोगों का सहयोग मिला उनमें सर्वप्रथम स्थान मेरी शोध निर्देशिका डॉक्टर अनीता शुक्ल का है। मेरी परम पूज्य शोध निर्देशिका डॉक्टर अनीता शुक्ल, जिनके प्रति मेरे मन में अपार श्रद्धा तथा उच्च स्थान है। मैं इस बात पर भी जोर देकर कहना चाहता हूं कि मेरी शोध निर्देशिका डॉक्टर अनीता शुक्ल ने मुझे इस विषय

पर न केवल शोधकार्य करने की प्रेरणा दी बल्कि शोध के दौरान सौहार्दपूर्ण एवं व्यवहार कुशल निर्देशन द्वारा मेरा मार्गदर्शन किया। उन्हीं के सहानुभूतिपूर्ण योगदान एवं आशीर्वाद का परिणाम है कि मैं यह शोधकार्य पूर्ण कर सका हूँ। यह मेरा सौभाग्य है कि उन्होंने मुझे अपने निर्देशन में शोधकार्य करने के लिए स्थान दिया। इसके लिए मैं उनका जीवन भर आभारी रहूंगा।

इसके अलावा मैं हिंदी विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर कल्पना गवली तथा अन्य प्राध्यापक, कर्मचारियों/पुस्तकालय के कर्मचारियों आदि के प्रति आभार प्रकट करता हूं।

इसके अलावा मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर शिव प्रसाद शुक्ल के प्रति आभारी हूं जिन्होंने समय-समय पर यह शोधकार्य पूर्ण करने का सहयोग दिया। जब-जब निराशा या कठिनाई आई उन्होंने मेरा उत्साहवर्द्धन किया। उनके स्नेह तथा आशीर्वाद के कारण ही मैं यह शोध का सफर तय कर सका हूँ। साथ ही साथ मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर राजेश कुमार गर्ग एवं डॉ. विद्यासागर उपाध्याय का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोधकार्य के लिए प्रेरित किया तथा जीवन में निरन्तर आगे बढ़ने का आशीर्वाद दिया।

वैचारिक दृष्टि से शोधकार्य पूरा करने में विभिन्न कथाकार/आलोचकों/विद्वानों तथा पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री ने मुझे नवीनता का बोध कराया उनके प्रति भी आभारी हूँ।

मेरे परिवार में मैं अपने माता-पिता के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए कहना चाहूंगा कि मेरे पिता श्री पवन कुमार तथा माता प्रभावती देवी के सहयोग से ही मैं यहां तक पहुंचा हूं। इसके अतिरिक्त अपने चाचा आनंद तिवारी, चाची, भाई नितेश, भाई रत्नेश तथा दोनों बहनों का आभारी हूँ जिन्होंने घर की परेशानियों तथा जिम्मेदारियों से मुझे मुक्त रखा।

इस शोधकार्य के लिए मेरे शोधार्थी मित्रों ने भी सहयोग दिया, इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ । मेरे शोधार्थी मित्रों में जैसे- जगदीश मौर्य, मनीष पाण्डे, अंजना मिश्रा, सुमन, डॉ.मिथिलेश मिश्र, डॉ. ईश्वर आदि। जीवन में नवीन उर्जा से मेरा उत्साहवर्द्धन करने वाले विजयलाल मिश्र, भाई राजनाथ दूबे, भाई मनीष तिवारी, भाई दूधनाथ मिश्र तथा कृष्णचंद्र यादव, राजेश कुमार सिंह, लवकुश अग्रहरी का आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग से मैं निरंतर आगे बढ़ता रहा।

अपने अन्य सहयोगियों का भी आभारी हूँ कि उन्होंने मेरे धैर्य को बनाये रखा। मेरे अन्य सहयोगी जैसे- स्वाती मिश्रा, विभा शुक्ला, प्रसून तिवारी, आरव तिवारी, बिरेन्द्र यादव, अरविंद मिश्र आदि।

मैंने इस शोध प्रबंध को श्रेष्ठतम बनाने की पूरी कोशिश की है। मैं यह चाहता हूँ कि यह शोधप्रबंध स्त्री को अपने अधिकारों के प्रति प्रेरित करे, उसमे नवीन जीवन बोध, आत्मसम्मान का भाव जागृत हो। नारी अपना अस्तित्व समझ सके और समाज में, राष्ट्र में अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व स्थापित करें। जब-जब जीवन में कोई कठिनाई आए तो स्त्री स्वंय अपना मार्ग निश्चित कर सके। घरेलू, कामकाजी, दलित या किसी भी वर्ग की स्त्री हो वह किसी पर निर्भर न होकर सम्मानित जीवन जी सके। यही मेरे शोधकार्य का उद्देश्य है। अपना यह शोधकार्य विद्वतजनों के समक्ष मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत कर रहा हूं। आशा एवं विश्वास है कि यह मेरा एक छोटा-सा प्रयास उन्हें जरूर रुचिकर लगेगा। फिर भी यदि कहीं गलतियां रह गयीं हो या शोधकार्य टंकित करने में त्रुटियां रह गई हों तो इसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

दिलीप कुमार